प्रातः क्लास 10-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

" बच्चों को सिर्फ एक की याद में ही नहीं बैठना है। तीन की याद में बैठना है। मूल है एक ही। परन्तु तुम जानते हो वह बाप भी है, शिक्षक भी है, सद्गुरु भी है। हम सभी को वापस ले जाने आये हैं। यह नई बात तुम ही समझते हो। बच्चे जानते हैं वह जो भक्ति सिखलाते हैं, शास्त्र सुनाते हैं वह सभी हैं मनुष्य। इनको तो मनुष्य नहीं कहेंगे। यह तो है निराकारी बाप। निराकार आत्माओं को बैठ पढ़ाते हैं। आत्मा शरीर द्वारा सुनती है। यह ज्ञान बुधि में होना चाहिए। अभी तुम बेहद के बाप की याद में बैठे हो। बेहद के बाप ने कहा है हे रूहानी बच्चों मुझे याद करो तो पाप कट जायें। यहां तो शास्त्र आदि की बात ही नहीं। जानते हो बाप हमको राजयोग सिखला रहे हैं। कितना भारी टीचर है। उच्च ते उच्च पद प्राप्त कराते हैं। जब तुम सतोप्रधान बन जावेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तब फिर लड़ाई होगी। नेचरल कैलेमिटिज भी होंगी। याद भी जरूर करना है। बुधि में सारा ज्ञान रहना है। सिर्फ एक ही बार पुरुषोत्तम संगम पर बाप आकर समझाते हैं नई दुनिया के लिये। छोटे बच्चे भी बाप को याद करते हैं। तुम तो समझदार हो। जानते हो बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। और उच्च पद पावेंगे बाप से। यह भी तुम जानते हो इन ल०ना० ने यह पद जो पाया है वह शिव बाबा से ही पाया है। यह ल०ना० ही 84 का चक्र लगाकर ब्रह्मा सरस्वती बने हैं। ब्रह्मा सरस्वती से ही फिर ल०ना० बनेंगे। अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान भी तुमको है। अभी तुम अन्धश्रधा से देवताओं के आगे माथा नहीं टेकेंगे। देवताएं के आगे जाकर अपने को पतित सिध करते हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न .... हम पापी विकारी ... हैं, कोई गुण नहीं। तुम जिनकी महिमा गाते थे अभी वह तुम स्वयं बन रहे हो। कहते हैं बाबा यह शास्त्र आदि कब से पढ़ना शुरु हुआ है। बाप कहते हैं जब से रावण राज्य शुरु हुआ है तब से ही भक्ति शुरु हुई है। सतयुग में तो भक्ति होती ही नहीं। न यह चित्र, शास्त्र आदि ही होते हैं। यह सभी है भक्ति की सामग्री। तुम जब यहां बैठते हो तो बुधि में सारा ज्ञान धारण होना चाहिए। यह संस्कार ही आत्मा ले जावेंगी। भक्ति के संस्कार नहीं ले जानी है। भक्ति के संस्कार वाले पुरानी दुनिया में मनुष्यों के पास ही जाकर जन्म लेते हैं। ज्ञान के संस्कार वाले नई दुनिया में जाकर जन्म लेंगे। यह भी जरूर है तुम हो ब्राह्मण। तो तुम ब्राह्मण कुल में ही जन्म लेंगे। जैसे क्रिश्चन धर्म वाले क्रिश्चन कुल में ही जन्म लेते हैं। तुम ब्राह्मण कुल में ही जन्म लेंगे न शूद्र कुल में न देवताओं के कुल में। यह ज्ञान बुधि में चक्र लगाना चाहिए। साथ2 बाबा को भी याद करना है। बाबा हमारा बाबा भी है बाप को भी याद किया तो विकर्म विनाश होंगे। बाबा हमारा टीचर भी है। तो पढ़ाई भी बुधि में आवेंगी। और सृष्टि चक्र का भी ज्ञान बुधि में है जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। (याद की यात्रा)

ओमशान्ति। भक्ति और ज्ञान। बाप को कहा जाता है ज्ञान का सागर। उनको भक्ति का भी सारा मालूम है। भक्ति कब शुरु हुई, कब पूरी होगी। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है। बाप ही आकर समझाते हैं। सतयुग आदि में तुम देवी-देवताएं विश्व के मालिक थे। वहां भक्ति का नाम नहीं था। एक भी मंदिर नहीं था। सभी देवी देवताएं ही थे। पीछे जब आधा दुनिया पुरानी होती है यानि 2500 वर्ष पूरे होते हैं अथवा त्रेता वा द्वापर का संगम होता है तब रावण आते हैं। संगम तो जरूर चाहिए ना। तो त्रेता और द्वापर के संगम पर रावण आते हैं जब कि देवी देवताएं वाम मार्ग में गिरते हैं। यह कोई भी नहीं जानते हैं सिवाय तुम्हारे। बाप भी आते हैं कलियुग अन्त और सतयुग आदि के संगम पर। और रावण आता है त्रेता और द्वापर के संगम पर। अभी उस संगम को कल्याण कारी नहीं कहेंगे। कल्याणकारी तो बाप का ही नाम है। द्वापरसे अकल्याणकारी शुरु होता है। बाप तो है चैतन्य बीज रूप। उनको सारी झाड़ का नॉलेज है। वह जड़ बीज भी अगर चैतन्य हो तो समझावे ना मैं से यह झाड़ ऐसे निकलता है। परन्तु जड़ होने कारण समझ नहीं सकते हैं। अपने को समझते हैं पहले झाड़ छोटा होता है फिर बड़ा निकलता है ताकि फिर फल देने शुरु कर देते हैं। कुमार-कुमारी भी छोटे

हैं फिर बड़े हो स्त्री-पुरुष बनते हैं, फिर फल भी देते हैं। तो चैतन्य ही सभीकुछ समझा सकते हैं। दुनिया में तो आजकल मनुष्यक्या 2 करते रहते हैं। चन्द्रमा में जाने लिये कोशिश करते हैं। यह सभी बातें अभी तुम सुन रहे हो। चन्द्रमा तरफ कितना उच्चा जाते हैं। लाखों माईल तक चले जाते हैं। जांच करने लिये कि देखें चन्द्रमा क्या चीज़ है। समुद्र में कितना दूर तक जाकर जांच करते हैं। परन्तु अन्त पा नहीं सकते हैं। पानी ही पानी है। एराप्लेन में ऊपर जाते हैं उन्हों को पेट्रोल इतना डालना है जो फिर वापस भी आ सके। परन्तु इतना पहुंच नहीं सकते हैं। क्योंकि बेहद है ना। सागर भी बेहद है। जैसे यह बेहद का ज्ञान सागर है, वह फिर पानी का बेहद का सागर है। आकाश तत्व भी बेहद है। चलते जाओ। धरती भी बेहद है। चलते जाओ। सागर के नीचे फिर भी धरती है। पहाड़ी किस पर खड़ी है। धरती पर। फिर धरती को खोदते हैं तो पहाड़ निकल2 फिर पानी भी निकल आते हैं। सागर भी धरती पर है। उनका कोई अन्त नहीं पा सकते कि कहां तक पानी है, कहां तक धरती है। परम पिता परमात्मा जो बेहद का बाप है उनके लिये भी बेअन्त नहीं कहेंगे। मनुष्य भल कहते हैं ईश्वर बेअन्त है। माया भी बेअन्त है। परन्तु तुम समझते हो ईश्वर तो बेअन्त हो नहीं सकता। बाकी यह आकाश बेअन्त है। यह 5तत्व है ना। आकाश तत्व, पृथ्वी तत्व। यह 5 तत्व तमोप्रधान बन जाते हैं। जैसे आत्मा भी तमोप्रधान बनती है फिर बाप आकर सतोप्रधान बनाते हैं। कितनी छोटी आत्मा है। 84 जन्म भोगती है। यह चक्र फिरता ही रहता है। यह बाप बैठ समझाते हैं आत्माओं का चक्र कब पूरा नहीं होता। यह फिरता ही रहता है। सुख और दुःख का चक्र फिरता ही रहता है। यह अनादी नाटक है। इनका अन्त नहीं होता। कब से शुरु हुआ, कब बन्द होगा। यह परमपरा से चला आता है। कब से शुरु हुआ यह कहें तो फिर अन्त भी हो। बाकी यह बाप समझाते हैं कब से नई दुनिया शुरु होती है फिर पुरानी होती है। यह 5000वर्ष का चक्र है जो फिरता ही रहता है। सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग फिर संगम युग। यह चक्र फिरता रहता है। आगे इनको तुम नहीं जानते थे। अभी जानते हो। बेहद के बाप ने समझाया है और तो कोई जान ही नहीं सकते। तो उन्हों ने बैठ शास्त्रों में लिखा है सतयुग की आयु इतनी लाखों वर्ष की है। तो मनुष्य सुनते सुनते उनको ही सच्च समझ लेते हैं। यह किसको भी पता नहीं पड़ता। भगवान कब आकर अपना परिचय देंगे। न जानने कारण कह देते हैं कलियुग की आयु 40हजार वर्षअजन पड़ी हैं। जब तक तुम न समझाओ। अभी तुम निमित बने हुये हो समझाने लिये कि कल्प 5000 वर्ष है न कि लाखों वर्ष का। तुम अज्ञान अंधेरे में हो। अभी तुम समझते हो आगे हम क्या2 करते थे। पूजा करते थे, गंगा स्नान करते थे, गुरु आदि करते थे। भक्ति मार्ग की कितनी सामग्री है। मनुष्यों को पैसा होता है तो फिर खर्चा करते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको कितने पैसे देकर जाता हूं। बेहद का बाप तो जरुर बेहद का वरसा देंगे। इससे सुख भी मिलता है। आयु भी बड़ी होती है। बाप बच्चों को कहते हैं मेरे लाडल बच्चे आयुष्वान-भव। वहां तुम्हारी आयु 150वर्ष होती है। कब काल खा नहीं सकता। बाप वर देते हैं। तुमको आयुष्वान बनाते हैं। तुम अमर बनेंगे। वहां कब अकाले मृत्यु नहीं होगी। कब विकार न होंगे। वहां तुम बहुत सुखी रहते हो। इसलिये उनको कहा ही जाता है सुखधाम। आयु भी बड़ी होती है। धनभी बहुत मिलता है। सुख भी बहुत। कंगाल से सिरताज बन जाते हैं। तुम्हारी बुधि में ही यह बात है। बाप आते ही हैं देवी देवता धर्म की स्थापना करने। वह तो जरुर बहुत छोटा झाड़ होगा। इन ल0ना0के राज्य में इतने सभी थोड़ेही होंगे। वहां है ही एक धर्म। एक राज्य, एक भाषा। इसको ही कहा जाता है विश्व में शान्ति। सारे विश्व में ही हम पार्ट धारी है। यह दुनिया नहीं जानती। अगर जानती होती तो बतावे कि कब से पार्ट बजाते आवे हैं। अभी तुम बच्चों को बाप समझा रहे है। गीत भी है ना बाबा से जो मिलता है सो और कोई से नहीं मिल सकता। सारी पृथ्वी आसमान सारे विश्व की राजधानी दे जाते हैं। यह ल0ना0 विश्व के मालिक थे। फिर बाद में जो राजायें आदि हुई है वे भारत के थे। सारे विश्व के सिर्फ तुम मालिक बनते हो। गायन भी है बाप जो देते हैं और कोई दे न सके। बाप ही आकर प्राप्ति कराते हैं। ——

। तो यह सारा ज्ञान बुधि में होना चाहिए। जो फिर कोई समझा सको। इतना समझने का है। अब समझा कोन सकते हैं, एक तो बन्धन मुक्त हो। गीत सुना है ना अन्त काल जो ... बाबा के पास जब आते हैं, बाबा पूछते हैं कितने बच्चे हैं तो कहते हैं 5 बच्चे अपने हैं, छठवां शिव शिव बाबा है। तो जरूर शिव बाबा सबसे बड़ा बच्चा ठहरा। शिव बाबा के बन गये तो फिर शिव बाबा अपना बनाकर विश्व का मालिक बना देते हैं। बच्चे तो वारिस हो जाते हैं। यह (ल0ना0) शिव बाबा के पूरे वारिस हैं। आगे जन्म में शिव बाबा के आगे सभी कुछ दे दिया। तो वरसा जरूर बच्चों को मिलेगा ना। बाबा ने कहा मुझे वारिस बनाओ। फिर दूसरा कोई नहीं। एक मिला तो बस बाबा सभी कुछ आप का है। आप का फिर हमारा है। आप हमको सारे विश्व की बादशाही देते हो। क्योंकि तुमको जो कुछ था वह दे दिया। ड्रामा में नूंध है। अर्जुन को विनाश भी दिखाया। नो बहुत चतुर्भज भी दिखाया। अर्जुन कोई और तो है नहीं। इनको मा0 हुआ देखा राजाई मिलती है तो क्यों न शिव बाबा को वारस बनाऊं। वह फिर हमको वारस बनाते हैं। यह सौदा तो बड़ा ही अच्छा है। कब कोई से पूछा नहीं। गुप्त ही सभी कुछ किया। गुप्त दान इसको कहा जाता है। किसको क्या पता इनको क्या हो गया। किन्हों ने समझा इनको वैराग्य आ गया। शायद सन्यासी बन गया। तो यह बच्चियां भी कहती हैं 5 बच्चे तो अपने हैं बाकी एक बच्चा हम इनको बनावेंगे। इसने भी सभी कुछ बाप के आगे रख दिया। जिससे बहुतों का सर्विस हो। बाबा को देख सभी को ख्याल आया। सभी घर-बार छोड़ भाग आये। वहां से ही हंगामा शुरू हुआ घर-बार छुड़ाने का। इन्होंने हिम्मत दिखाई ना। शास्त्रों में भी लिखा है बदठी बनी थी। क्योंकि इन्हों को एकान्त जरूर चाहिए। सिवाय बाप के और कोई की याद न रहे। मित्र सम्बन्धी आदि कोई भी न रहा सिवाय बाप के। क्योंकि आत्मा जो पतित बनी है उन को पावन जरूर बनाना है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनो। इस पर ही मुसीबत आती है। कहते थे यह स्त्री पुरुष के बीच में झगड़ा डालने वाला ज्ञान है। क्योंकि एक पवित्र बने दूसरा न बने तो मारा-मारी चल पड़े। इन सभी ने मारें खाई हैं। क्योंकि अचानक नई बात हुई ना। सभी आश्चर्य खाने लगे। यह क्या हुआ जो इतने सभी भागे। मनुष्यों में समझ तो है नहीं। सिर्फ इतना कहते थे कोई ताकत है। ऐसा तो कब हुआ नहीं जो अपना घरबार छोड़ भागे। यह खेल है ड्रामा में। यह सभी चरित्र शिव बाबा के थे। उनमें ताकत थी। जो उस समय भागी। कोई तो हाथ खाली भी भागी। घरबार मकान आदि सभी छोड़ भागी। फिर कोई युक्ति की कि माल आदि बिक जाये पैसे निकल आये ताकि बुधि योग मकान आदि में न जाये। नहीं तो कमजोर अवस्था नहीं होगी। कुछ भी याद न रहे। बाकी सिर्फ यह शरीर है जिससे कर्म करना है। आत्मा को भी पवित्र बनना है याद की यात्रा से। तब ही पवित्र आत्मायें वापस जा सकती है। स्वर्ग में अपवित्र आत्मा तो जा न सके। कायदा ही नहीं। मुक्ति-जीवनमुक्तिधाम में पवित्र ही होते हैं। पवित्र बनने में ही कितने विघ्न आदि पड़ते हैं। आगे कोई सतसंग आदि में जाने रुकावट थोड़ी ही होती थी। कहां भी चले जाते थे। यहां पवित्रता के कारण विघ्न पड़ते हैं। यह तो समझते हो पवित्र बनने बिगर वापस घर जा नहीं सकते हैं। धर्मराज द्वारा मोचरे खाने पड़ेंगे। फिर थोड़ी मानी मिलेंगी। जो मोचरा नहीं खावेंगे उनको पद अच्छा मिलेगा। यह समझ की बात है। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों तुमको अब हमारे पास आना है। यह पुराना शरीर छोड़ पवित्र आत्मा बन आना है। नया शरीर अभी नहीं मिलेगा। यह तो तमोप्रधान पुराना तत्वों का बना हुआ है। फिर जब 5 तत्व सतोप्रधान नये हो जावेंगे। तब तुमको शरीर भी नया सतोप्रधान मिलेंगे। सारी उथल पुथल हो नई दुनिया बन जावेगी। जैसे बाबा इनमें आकर बैठते हैं। वैसे आत्मा बिगर कोई तकलीफ गर्भ महल में आकर बैठती है। जैसे कृष्ण को पिपर के पत्ते पर दिखाते हैं ना। अभी कोई समुद्र में पिपर के पत्ते पर ऐसा कोई होता नहीं है। यह बताया है कैसे आराम से रहते हैं। फिर जब समय होता है तो बाहर आ जाते हैं तो जैसे बिजली चमक जाती है। क्योंकि आत्मा सतोप्रधान चकमक बन गई ना। खाद सारी निकल गई। पवित्र बन जाती है। बच्चों ने सा0 किया है वहां बच्चा कैसे होता है। कृष्ण का जन्म कैसे गर्भ महल में होता है। मनुष्य तो समझते हैं प्रलय हो गई फिर कृष्ण पहले2 सागर में पिपर के पत्ते पर आया।

बाप समझाते हैं प्रलय आदि होती ही नहीं। बाकी कृष्ण का जन्म गर्भ महल में होता है। यहां तो पुनर्जन्म गर्भजेल में होताहै। क्योंकि आत्मा अपवित्र है। यह सभी ड्रामा में नूंध है। तो बाप डिटेल में समझाते रहते हैं। मूल बात शिव बाबा को याद करो। भक्ति मार्ग में कहते भी थे आप जब आवेंगे तो हम आपे ही बनेंगे। बेहद के बाप का है बेहद का वरसा। यह बातें दूसरा कोई समझन सके। बाप को ही सर्वव्यापी कह दिया। तुम्हारी बुधि में है बेहद काबाप जिसके हम बच्चे हैं वह बाप आकर हमको देते हैं वरसा। 5000 वर्ष पहले भी बरोबर यह भारत स्वर्ग था। और कोई धर्म न था। अनेक बार ऐसा होगा। भारत स्वर्ग था तो इन ल०ना० का राज्य था। अभी नहीं है। अभी तो बहुतों का राज्य होगा। यह ज्ञान तुम मीठे2 ब्राहमण बच्चों को ही अभी मिलता है। और कोई को मिल न सके। गायन भी है मुरली तेरी में है जादू खुदाई। खुद खुदा आकर इस रथ में मुरली बजाते हैं ना। जिसको अविनाशी ज्ञान रत्न कहा जाताहै। रत्नों का दान लेना और दान देना। वह शास्त्र तो जन्म जन्मान्तर पढ़ते2 नीचे ही गिरते आये हैं। कौड़ी मिसल बन पड़े हैं। भक्ति मार्ग के शास्त्र को रत्न नहीं कहा जा सकता। बाप तो स्वयं ज्ञान का सागर है। ऐसे थोड़े ही कहेंगे यह शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। भक्ति मार्ग में कहते हैं फलाना इतना शास्त्र पढ़ा हुआ है। इनके लिये नहीं कहेंगे। यह तो सभी कुछ जानते हैं। ज्ञान का सागर है। भक्ति को भी जानते हैं। तो अब जिन्हों ने कल्प पहले ज्ञान सुना होगा वही आकर सुनेंगे। बाबा 50 वर्ष रहते हैं। कोई आगे कोई पीछे आते हैं। पिछाड़ी तक आते रहेंगे। ऐसे नहीं कि पिछाड़ी में आने वाले कोई उच्च पद नहीं पा सकेंगे। नहीं। इसमें सारी बुधि की चमत्कार की बात है। बहुत नये2 आते हैं। पुरानों से होशियार हो जाते हैं। लिखते हैं बाबा यह तो जैसे कि पहले से ही समझा हुआ है। सुनकर आंखों से आसूं बहाते रहते हैं। एक रोज में भी किसको इतना नशा चढ़ जाता है जो 32 वर्ष वालों को भी नहीं समझता। आठ की माला में पिराये सकते हैं। बस याद ही याद के धून में लगे रहते हैं। और सभी कुछ भूल जावेंगे। गृहस्थ व्यवहार में रहते लगन लग गई तो बस। फिर तो दौड़ी पहनते रहते। कहते हैं हमको नौकरी आदि कुछ नहीं चाहिए। अच्छी लगन लग जाती है। सर्विसएबुल हैं तो फिर युक्ति बताई जाती है। स्त्री बच्चे आदि हैं हर्जा नहीं। साहुकारों को तो बहुत पैसे चाहिए। गरीब को तो कहेंगे हर्जा नहीं। तुम रूहानी सर्विस में लग जाओ। गरीब जो ब्राहमण हैं उनको हम भेज देंगे। तुम सर्विस में लग जाओ। तुम्हारे तकदीर में उच्च पद है। ब्राहमणकुल में कोई गरीब होगा तो ब्राहमणों पर बाप का तरस पड़ेगा। यह सर्विस बहुत अच्छा करते हैं तो खाना आदि दे देंगे। ब्राहमणकुल वाले को ही देंगे। दूसरे किसको नहीं। वह सब देखेंगे। बहुतों का कल्याण कर सकते हैं तो फिर मदद दी जाती है। हर्जा नहीं है। यहां तो बहुतों को यह कमाई कराये पदमापदमभाग्यशाली बना देते हैं। इतनी दुरन देशी बाप को रखनी पड़ती है। यह हमारी सेवा करते हैं इनके कुटुम्ब वाले दुःखी तो नहीं होते हैं। ब्राहमण कुल वालों का ख्याल रखना पड़ता है। तुम बच्चों को यह स्मृति आई है हम देवी देवता थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 नीचे आये हैं। अभी फिर बाप आये हैं देवता बनाने। विराट रूप में भी दिखाते हैं ना। ब्राहमण चोटी फिर देवता क्षत्री वैश्य शुद्र। देवताओं के पांव में पदम दिखाते हैं। ब्राहमण तो है चोटी। चोटी में ठपा कैसे लगावेंगे। शुद्र से ब्राहमण पदमापदमपति बनते हैं इसलिये पांव में दिखाया है। ऐसे ही स्वदर्शनचक्र विष्णु को दिखाया है। तुमको तो दे न सके। तो यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। पायन्टस सभी बुधि में धारण करनी है। सिवाय एक के और कोई को याद करना नहीं है। शरीर को भी भूल जाना है। आत्मा नंगी आई थी, नंगे ही जाना है। मेहनत सारी इसमें ही लगती है। मनुष्य खुशी से पुराना कपड़ा उतार नया पहनते हैं। यह भी पुराना तन है ना। आत्मा पवित्र बनती है तो फिर उनको शरीर भी पवित्र चाहिए वह तो नई दुनिया में ही मिलेगी। पवित्र होकर वापिस घर जाना है। जब तक संगम न हो बाप न आये तब तक कोई भी वापस जा नहीं सकते।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

-:: विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?::-*